चौखम्बा संस्कृत सीरीज
१२९
****

श्रीव्यासमहर्षिप्रोक्तं

लिङ्ग महापुराणम्

परिचय, विषय-सूची, संस्कृत मूल, हिन्दी अनुवाद, कुछ विशेष शब्दों के अर्थ और टिप्पणियाँ, श्लोकानुक्रमणी एवं विषयानुक्रमणिका सहित

अनुवादक एवं सम्पादक
पुरस्कृत लेखक
पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र शास्त्री
पूर्व संग्रहाध्यक्ष
हिन्दी संग्रहालय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
पूर्व अनुवादक
पुराण विभाग
मानद पुस्तकालय अधिकारी
अखिल भारतीय संस्कृत परिषद् पुस्तकालय, लखनऊ

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

विषय सूची

अध्याय क्रम | *पृष्ठ संख्या*

● लिंगमहापुराण (पूर्व भाग) १-६१३

❐ पहला अध्याय १
लिंगोद्भव प्रतिज्ञा का वर्णन
नारद जी का नैमिषारण्य में आना। सूत जी का भी वहाँ आना। ऋषियों का प्रश्न पूछना। सूत जी का लिंग महापुराण कहने का उपक्रम।

❐ दूसरा अध्याय ४
अनुक्रमणिका का कथन
लिंगपुराण प्राप्तिक्रम और संक्षेप में विषयों की अनुक्रमणिका।

❐ तीसरा अध्याय ९
प्राकृत प्रारम्भिक सृष्टि का वर्णन
कालमान और अखण्ड ब्रह्माण्ड निरूपण।

❐ चौथा अध्याय १३
सृष्टि प्रारम्भ का वर्णन
ब्रह्माण्ड रूप का सृष्टि स्थिति और लय वर्णन।

❐ पाँचवा अध्याय १८
प्रजा सृष्टि का वर्णन
ब्रह्मा से ऋषि देव आदि की सृष्टि

❐ छठाँ अध्याय २२
वह्नि, पितृ और रुद्र की सृष्टि का वर्णन

❐ सातवाँ अध्याय २५
मनु, व्यास, योगेश्वर और उनके शिष्यों का वर्णन

❐ आठवाँ अध्याय ३०
अष्टांग योग का निरूपण
अष्टांग योग के क्रम में शिव की आराधना विधि का निरूपण।

❐ नवाँ अध्याय ४०
योग में विघ्न का कथन
योग में विघ्न और अष्टसिद्धि आदि का वर्णन (योग स्वरूप कथन)।

❐ दसवाँ अध्याय ४६
भक्ति भाव का कथन
भक्ति और श्रद्धा का माहात्म्य।

❑ **ग्यारहवाँ अध्याय** ५१
सद्योजात माहात्म्य
सद्योजात और उनके शिष्यों का वर्णन।

❑ **बारहवाँ अध्याय** ५३
वामदेव माहात्म्य
वामदेव और उनके शिष्यों की उत्पत्ति का वर्णन।

❑ **तेरहवाँ अध्याय** ५५
तत्पुरुष माहात्म्य
तत्पुरुष गायत्री के उपाख्यान का कथन।

❑ **चौदहवाँ अध्याय** ५७
अघोर की उत्पत्ति
अघोरेश की उत्पत्ति का वर्णन।

❑ **पंद्रहवाँ अध्याय** ५९
अघोरेश माहात्म्य
अघोरेश मन्त्र विधि।

❑ **सोलहवाँ अध्याय** ६२
ईशान माहात्म्य
ईशान की उत्पत्ति, पंच ब्रह्मात्मक स्तोत्र, गायत्री महिमा वर्णन।

❑ **सत्तरहवाँ अध्याय** ६६
लिंग की उत्पत्ति
सद्य आदि की महिमा वर्णनपूर्वक ब्रह्मा और विष्णु के विवाद की शान्ति के लिये लिंग के उद्धव (उत्पत्ति) का वर्णन।

❑ **अठारहवाँ अध्याय** ७४
विष्णु स्तव
विष्णु कृत महेश्वर स्तोत्र (विष्णु द्वारा शिव की प्रशंसा में कृत स्तोत्र।

❑ **उन्नीसवाँ अध्याय** ७८
विष्णु को प्रबोध
महेश्वर की कृपा से ब्रह्मा और विष्णु को वर प्राप्ति और मोह की निवृति

❑ **बीसवाँ अध्याय** ८०
ब्रह्मा को प्रबोधन
विष्णु की नाभि के कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति का वर्णन।

❑ **इक्कीसवाँ अध्याय** ८८
ब्रह्मा और विष्णु द्वारा स्तुति
ब्रह्मा और विष्णु कृत महेश स्तोत्र (शिव की स्तुति)।

❑ **बाईसवाँ अध्याय** ९६
रुद्र की उत्पत्ति का वर्णन
महेश्वर से ब्रह्मा और विष्णु को वर प्राप्ति। सर्व रुद्र का उद्भव और ब्रह्मा का तप करना और सर्पों की उत्पत्ति का वर्णन।

❑ **तेईसवाँ अध्याय** ९९
विविध कल्पों का वर्णन
ब्रह्मा के प्रश्न के अनुरोध से सद्य आदि का सम्भव (उत्पत्ति) और गायत्री की महिमा।

❑ **चौबीसवाँ अध्याय** १०३
शिव के अवतार
महेश्वर के विषय में योगावतार और उनके शिष्य व्यास आदि का युग क्रम से वर्णन।

❑ **पच्चीसवाँ अध्याय** ११४
स्नान विधि
ऋषियों के पूछने पर लिंग के अर्चन विधिपूर्वक शिव द्वारा उक्त स्नान (और आचमन) विधि का वर्णन।

❑ **छब्बीसवाँ अध्याय** ११७
पंचयज्ञ विधान
ज्ञान की द्विविधा संध्या आदि नित्यकर्म और पंचयज्ञ कथन (पवित्र स्नान प्रक्रिया)।

❑ **सत्ताईसवाँ अध्याय** १२१
लिंग की पूजा विधि
लिंग की पूजा।

❑ **अट्ठाईसवाँ अध्याय** १२६
शिवार्चन तत्त्व संख्यादि वर्णन
हृदय में शिव पूजन, उसकी महिमा और तत्त्व संख्या निरूपण (शिव की मानसिक पूजा)

❑ **उन्तीसवाँ अध्याय** १३०
मृत्यु पर विजय
दारुवन में शिव का जाना, दारुवनवासियों का शिव पर क्रोध और सुदर्शन का आख्यान तथा क्रम सन्यास लक्षण।

❑ **तीसवाँ अध्याय** १३७
श्वेत मुनि की कथा
शिव की आराधना से श्वेत मुनि की मृत्यु पर विजय।

❑ इकत्तीसवाँ अध्याय १४१

शिव की स्तुति

ब्रह्मा द्वारा प्रणीत विधान से मुनिगणों द्वारा शिव की आराधना, उनके तप से संतुष्टि और शिव का दर्शन देना।

❑ बत्तीसवाँ अध्याय १४५

शिव की स्तुति

दारुवन में दिव्य रूप शिव के दर्शन से प्रसन्न महामुनियों द्वारा कृत स्तोत्र का निरूपण।

❑ तैतीसवाँ अध्याय १४७

ऋषि वाक्य

स्तुति से सन्तुष्ट शिव और ऋषिगण के संवाद में शैवों के स्तोत्र का माहात्म्य वर्णन।

❑ चौतीसवाँ अध्याय १५०

योगी की प्रशंसा

मुनिगण के प्रश्न के अनुसार से महेश्वर द्वारा युक्त भस्म स्नान प्रकार वर्णन और योगी की प्रशंसा का वर्णन।

❑ पैंतीसवाँ अध्याय १५३

क्षुप नामक राजा की पराजय का वर्णन

ब्राह्मण क्षत्रियों के महत्त्व और अमहत्त्व के विवाद को करते हुये क्षुप के वज्र के प्रहार से दधीच का विनाश, शुक्र विद्या के प्रभाव से पुनः जीवित दधीच का महेश्वर की कृपा से वज्रसार देह की प्राप्ति और दधीच द्वारा क्षुप की पराजय का वर्णन।

❑ छत्तीसवाँ अध्याय १५६

क्षुप दधीच विवाद

दधीच द्वारा पराजित क्षुप कृत विष्णु की आराधना, क्षुप कृत विष्णु स्तोत्र वर्णन, युद्ध में देवगण के साथ विष्णु का दधीच मुनि के पराजय का वर्णन। देवों के लिये और राजा के लिये दधीच के शाप का निरूपण।

❑ सैंतीसवाँ अध्याय १६३

ब्रह्मा को वर प्रदान

कुमार द्वारा पूछने पर शैलादि द्वारा अपने उद्भव के प्रसंग में ब्रह्मा और विष्णु को अपने महत्त्व के विषय में कलह करते हुये दोनों को शिव के वर दान का वर्णन।

❑ अड़तीसवाँ अध्याय १६७

वैष्णव कथन

विष्णु को महेश्वर का माहात्म्य कहकर नारायण को आदि सृष्टि के उत्पादन का कथन।

❑ उन्तालीसवाँ अध्याय १६९

चार युगों का विशिष्ट धर्म

कृत आदि चारों युगों में धर्म और लोक वृत्ति का निरूपण।

❑ **चालीसवाँ अध्याय** १७५

चतुर्युग का परिमाण

कलियुग से उत्पन्न लोक वृत्त का वर्णन, कलियुग के अन्त में कल्कि के प्रादुर्भाव का वर्णन, कृत के आरम्भ के क्रम का निरूपण, कल्प; मन्वन्तर व्याख्या निरूपण।

❑ **एकतालीसवाँ अध्याय** १८३

इन्द्र वाक्य

शिव से योग माया में ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र का उद्भव कथन, पितामह कृत नामाष्टक नामक शिव स्तोत्र निरूपण और ब्रह्मा को वर प्रदान।

❑ **बयालीसवाँ अध्याय** १८९

नन्दिकेश्वर की उत्पत्ति

शिलाद के तप से सन्तुष्ट महेश्वर से वर प्राप्ति का वर्णन। नन्दिकेश्वर उत्पत्ति वर्णन।

❑ **तैंतालीसवाँ अध्याय** १९३

नन्दिकेश्वर अभिषेक विचार

शिलाद के पुत्र नन्दिकेश्वर का रुद्र के आराधन का वर्णन और शिव का नन्दिकेश्वर को सब लोकों का अधिपति करने पर विचार।

❑ **चौवालीसवाँ अध्याय** १९७

नन्दिकेश्वर का अभिषेक

शिव की आज्ञा से सब प्रकार से सज्जित गाणपत्य पद प्रदान और उनके विवाह का वर्णन।

❑ **पैंतालीसवाँ अध्याय** २०१

पाताल का वर्णन

सूत कृत शिव के विराट रूप का वर्णन और पाताल आदि अधोलोकों का वर्णन।

❑ **छियालीसवाँ अध्याय** २०३

द्वीप और द्वीपेश्वर वर्णन

भूलोक के वर्णन के प्रसंग में क्षार उदा आदि सात सागरों और जंबू द्वीप आदि सात द्वीपों का निरूपण। अधिपति प्रियव्रत के पुत्र आग्नीध्र द्वीप वंशों का निरूपण।

❑ **सैंतालीसवाँ अध्याय** २०७

भरतवर्ष वर्णन

जंबू द्वीप गत नव वर्ष के कथन से भरत अन्त आग्नीध्र वंशों का वर्णन (भारत वर्ष)।

❑ **अड़तालीसवाँ अध्याय** २०९

मेरु पर्वत

भूमध्य गत मेरु पर्वत का प्रमाण कथन, इन्द्र आदि अष्ट लोकपालों के अमरावती आदि पुरियों का वर्णन और ब्रह्मा, विष्णु और महेश के विमानों आदि का निरूपण।

❒ उन्चासवाँ अध्याय २१२

इलावर्त

जंबू द्वीप का विस्तार वर्णन, पर्वत, वन और वहाँ के निवासी लोकों का वर्णन।

❒ पचासवाँ अध्याय २१७

देवों के निवास

भूतल गत अनेक पर्वतों पर शक्र आदि के पुर और आयतन का वर्णन।

❒ इक्यावनवाँ अध्याय २१९

शिव के आवास

देवकूट के मणिमय शिखर और कैलास के शिखर पर कुबेर के आयतन के समीप मंदाकिनी के उत्तर पार्श्व में और नंदा के तीर पर शिव के चार आवास का वर्णन।

❒ बावनवाँ अध्याय २२२

भुवन कोश स्वभाव वर्णन

शुभ गंगा का उद्भव, नव वर्ष के मनुष्यों का वर्णन आदि कथन।

❒ तिरपनवाँ अध्याय २२७

भुवन कोश विन्यास वर्णन

प्लक्ष द्वीप आदि के अनुकूल क्रम से भू लोक, ऊर्ध्व लोक का वर्णन, नरक वर्णन और यक्ष चेष्टित वर्णन।

❒ चौवनवाँ अध्याय २३२

ज्योतिश्चक्र में सूर्यादि ग्रह गति आदि का वर्णन

भगवान सूर्य की गति का निरूपण, उत्तमपाद के पुत्र ध्रुव के संक्रमण का कथन और मेघवृष्टि आदि का कथन।

❒ पचपनवाँ अध्याय २३८

सूर्य के रथ का निर्णय

शिव रूप सविता के चैत्र आदि बारह मासों में अलग-अलग मुनि नाग, यक्ष, गन्धर्व, देव, अप्सरा और रक्षों का वर्णन।

❒ छप्पनवाँ अध्याय २४५

सोम का वर्णन

चन्द्रमा का अति उत्तम स्पन्दन वर्णन, कृष्ण पक्ष में देवों द्वारा कला में स्थित अमृत पान में शुक्ल पक्ष में सूर्य की सुषुम्ना नामक किरण के आप्यायन से सोम (चन्द्र) के ह्रास और वृद्धि का कथन।

❒ सत्तावनवाँ अध्याय २४७

ज्योतिश्चक्र में ग्रह गति का वर्णन

मंगल, बुध आदि ग्रहों का मण्डल मान, गति, रथ आदि का वर्णन।

❑ अट्ठावनवाँ अध्याय २५०

सूर्य आदि का अभिषेक कथन

(सूर्य और अन्यों का अभिषेक) शिव की कृपा की विधि से ग्रहों आदि के आधिपत्य में मुख्य रूप से अभिषिक्त दिवाकर आदि का वर्णन।

❑ उन्सठवाँ अध्याय २५२

सूर्य रश्मि का स्वरूप कथन

पार्थिव, शुचि और वैद्युत भेद से अग्नि का विधि कृत तीन प्रकार-वर्णन और माघ आदि मासों में सूर्य के कार्य संख्या आदि का वर्णन।

❑ साठवाँ अध्याय २५६

सूर्य मण्डल

स्फुट रूप से सूर्य आदि महाग्रहों का स्वभाव वर्णन, सूर्य की सूक्ष्म सात रश्मियों का वर्णन और सूर्य माहात्म्य वर्णन।

❑ इकसठवाँ अध्याय २५९

ग्रह संख्या वर्णन

(ग्रहों की स्थिति) ग्रह स्थान अभिमानिवर्णन और ग्रह, ऋक्ष आदि का वर्णन।

❑ बासठवाँ अध्याय २६४

ध्रुव का संस्थान वर्णन

सुनीति से उत्पन्न उत्तानपाद के पुत्र माता के कहने से दुःखित हृदय होकर ध्रुव भगवान की आराधना से तारा ग्रहों से ऊपर ध्रुव पद की प्राप्ति का वर्णन।

❑ तिरसठवाँ अध्याय २६८

देवादि की सृष्टि का कथन

(देवों और अन्य की उत्पत्ति) दक्ष से समुद्भव देवों वसिष्ठान्त की सृष्टि का वर्णन।

❑ चौसठवाँ अध्याय २७५

वासिष्ठ कथन

अनुजों के साथ तपोवन में गये वशिष्ठ पुत्र शक्ति मुनि का रुधिर राक्षस के भक्षण से वसिष्ठ का परिदेवन और रक्षो दाह पूर्वक शक्ति की पत्नी से पराशर की उत्पत्ति कथन।

❑ पैंसठवाँ अध्याय २८६

रुद्र सहस्त्रनाम

(शिव के सहस्त्र नाम) सोम सूर्य वंश में उत्पन्न नरपति के कथन के प्रसंग में त्रिधन्वा को ब्रह्मा के पुत्र तंडिन द्वारा रुद्र सहस्त्रनाम स्तोत्र का निरूपण।

❑ छाछठवाँ अध्याय २९९

ययाति की कथा

सूर्य वंश के ययाति राजा तक सूर्य वंशी त्रिधन्वा आदि के वंश का निरूपण।

❑ **सरसठवाँ अध्याय** ३०६
सोम वंश में ययाति चरित
विस्तार से ययाति राजा के चरित वर्णन के प्रसंग में सुखावह राजा की गाथा का कथन।

❑ **अड़सठवाँ अध्याय** ३०९
वंशों का वर्णन
ययाति के ज्येष्ठ पुत्र यदु के कृष्णावतार में हेतु होने के कारण सात्वतान्त वंशावली का कथन।

❑ **उनहत्तरवाँ अध्याय** ३१३
सोम वंश का वर्णन
यदुवंश में पृथ्वी के उद्धार के लिये श्री कृष्ण के प्रादुर्भाव का वर्णन तथा संक्षेप में श्री कृष्ण चरित वर्णन।

❑ **सत्तरवाँ अध्याय** ३२०
सृष्टि विस्तार
परमात्मा शिव से आदि सृष्टि का निरूपण।

❑ **इकहत्तरवाँ अध्याय** ३५१
पुरदाह पर नन्दिकेश्वर वाक्य
विद्युन्माली, तारकाक्ष, कमलाक्ष नामक तीन राक्षसों को ब्रह्मा के वर से कांचन, रजत और आयस तीन पुरों का लाभ। त्रिपुर वासियों द्वारा तीनों लोकों का उत्पीडन, उनके नाश के लिये देवों द्वारा यत्नों का निरूपण।

❑ **बहत्तरवाँ अध्याय** ३६७
त्रिपुर दाह पर ब्रह्मस्तव
(रुद्र के रथ का निर्माण) सब देवों की प्रार्थना से रथ, चाप और धनुष आदि से संयुक्त महादेव द्वारा त्रिपुर विनाश के लिये प्रयाण का वर्णन और त्रिपुर विनाश।

❑ **तिहत्तरवाँ अध्याय** ३८४
ब्रह्मोक्त लिंगार्चनविधि
(शिव पूजा भाव) देवताओं को ब्रह्मा द्वारा प्रोक्त लिंगार्चन विधि का निरूपण।

❑ **चौहत्तरवाँ अध्याय** ३८७
शिवलिंग भेद स्थापनादि का वर्णन
ब्रह्मा के नियोग से विष्णु आदि को अर्चना के लिये विश्वकर्मा द्वारा निर्मित इन्द्रनीलमय आदि लिंगों की प्राप्ति का वर्णन, लिंग भेद कथन तथा लिंग स्थापना फल आदि का निरूपण।

❑ **पचहत्तरवाँ अध्याय** ३९०
शिव का अद्वैत कथन
वस्तुतः शिव के निर्गुण होने पर भी लोकोद्धरण के लिये उमा सहित का योगियों के ध्यान के अवसर पर षड्दलस्थ अधिष्ठान चक्र आदि के धारण आदि का निरूपण।

❑ छिहत्तरवाँ अध्याय ३९४
शिवमूर्त्ति की प्रतिष्ठा का फल कथन
लीलाधृत अनेक विध शिव विग्रह प्रतिष्ठा फल कथन।

❑ सतहत्तरवाँ अध्याय ४००
उपलेपन आदि कथन
मृदिका आदि से रत्न पर्यन्त द्रव्यों से शिव के प्रासाद करने के फल का कथन और शिव क्षेत्र मान आदि मंडन निरूपण।

❑ अठहत्तरवाँ अध्याय ४०९
भक्ति महिमा वर्णन
शिवालय का उपलेपन आदि सब क्रियाओं में वस्त्रपूत जल का माहात्म्य तथा अहिंसा के माहात्म्य का कथन।

❑ उन्यासीवाँ अध्याय ४१२
शिवार्चन की विधि
उच्छिष्ट और संकुद्ध आदि व्यक्तियों द्वारा किये गये पूजा का फल कथन, शिव मंदिर में दीप दान का फल कथन, शिव दर्शन का फल कथन।

❑ अस्सीवाँ अध्याय ४१६
पाशुपत व्रत का माहात्म्य
देवताओं का कैलास पर शिव के पास जाना। कैलास का वैभव वर्णन तथा शिव निरूपित पाशुपत व्रत।

❑ इक्यासीवाँ अध्याय ४२२
पशुपाश विमोचन, लिंग पूजादि कथन
पशुपाश विमोचन, लिंग पूजा व्रत आदि का कथन।

❑ बयासीवाँ अध्याय ४२७
व्यपोहनस्तव का निरूपण
सर्वपाप नाशन ब्रह्मा द्वारा प्रोक्त पुण्यजनक व्यपोहनस्तव का निरूपण।

❑ तिरासीवाँ अध्याय ४३६
शिव व्रत कथन
प्रति मास अष्टमी आदि में शिव की प्रसन्नता के लिये रात्रि व्रत की विधि का कथन।

❑ चौरासीवाँ अध्याय ४४२
उमा महेश्वर व्रत कथन
नर और नारी के हितकारक व्रत के मध्य में श्रेष्ठ उमा महेश्वर व्रत का निरूपण।

❑ पचासीवाँ अध्याय ४४८
पंचाक्षर मन्त्र माहात्म्य
शिव द्वारा प्रोक्त ऋषि, छन्द, देवता, बीज और विनियोग सहित पंचाक्षर मन्त्र की विधि का निरूपण।

❑ **छियासीवाँ अध्याय** ४६८
संसार विष कथन
सब दुःखों के निवारण के लिये मुनियों के लिये शिव द्वारा प्रोक्त ध्यान यज्ञ का माहात्म्य वर्णन तथा पशु पाश विमोचन के लिये शिव ज्ञान माहात्म्य का वर्णन।

❑ **सत्तासीवाँ अध्याय** ४८१
मुनि मोह शमन
श्री शिव की कृपा से सनक आदि मुनि कुमार मुनियों का माया रहित होने से सिद्ध पद की प्राप्ति का वर्णन।

❑ **अट्ठासीवाँ अध्याय** ४८४
अणिमादि अष्ट सिद्धि त्रिगुण संसार पूर्व अग्नि में होमादि का वर्णन
पाशुपत योग विशिष्ट योगियों का अणिमादि सिद्धि लाभ। त्रिगुण संसार का विस्तार से वर्णन तथा अन्त में प्राणाग्नि में सर्व होम का वर्णन।

❑ **नवासीवाँ अध्याय** ४९२
सदाचार कथन
सर्वलोक हितावह सदाचार शौच का निरूपण।

❑ **नब्बेवाँ अध्याय** ५०३
यतियों के प्रायश्चित्त
यतियों के दोष को दूर करने के लिये शिव प्रोक्त प्रायश्चित्त विधि का वर्णन।

❑ **इक्यानबेवाँ अध्याय** ५०६
अरिष्ट कथन
सब मानवों का विस्तार से मृत्यु चिह्न का निरूपण।, योगविधि में प्रणव का माहात्म्य तथा शिव की उपासना का निरूपण।

❑ **बानबेवाँ अध्याय** ५१३
वाराणसी श्रीशैल माहात्म्य
विस्तार से वाराणसी माहात्म्य वर्णन, वाराणसी के अनेक स्थानों का वर्णन, श्री विश्वेश्वर की पूजा विधि का वर्णन।

❑ **तिरानबेवाँ अध्याय** ५३०
असुर अंधक का कथानक
देवताओं के शत्रु हिरण्याक्ष के पुत्र अंधक का शिव द्वारा कृत निग्रह का वर्णन।

❑ **चौरानबेवाँ अध्याय** ५३३
वराह प्रादुर्भाव
पृथ्वी के उद्धार के लिये वराह रूपधारी भगवान विष्णु द्वारा अपनी दंष्ट्रा पर धर कर जाते हुये हिरण्याक्ष से युद्ध तथा वहाँ हिरण्याक्ष का वध।

❑ पंचानबेवाँ अध्याय ५३७

नृसिंह का दमन

जगत्प्रसिद्ध सुरपीडक हिरण्यकशिपु के तेज को शान्त करने के लिये नृसिंह रूपधारी विष्णु द्वारा हिरण्यकशिपु का बध करके प्रसन्न विष्णु के नृसिंहावतार समाप्ति के लिये शिव का शरभ रूप धारण करना और नृसिंह के उद्धार का वर्णन।

❑ छानबेवाँ अध्याय ५४३

शरभ प्रादुर्भाव

नृसिंह से समागम, नृसिंह और वीरभद्र का संवाद, युद्ध में नृसिंह की पराजय तथा नृसिंहकृत रुद्र की स्तुति का वर्णन।

❑ सत्तानबेवाँ अध्याय ५५५

जलंधर वध

ब्रह्मा के वर से विश्वेश शिव को छोड़कर अन्य किसी देव या असुर से अवध्य ब्रह्मा, विष्णु आदि सुरों के विजेता जलंधर असुर के बध के लिये सुदर्शन चक्र बनाकर शिव द्वारा जलंधर असुर के बध का वर्णन।

❑ अट्ठानबेवाँ अध्याय ५६०

सहस्त्र नामों द्वारा पूजन से विष्णु को चक्र लाभ (शिव के सहस्र नाम)

असुर पराभूत अवतार रक्षार्थ विष्णु का सहस्त्र नाम स्तोत्र तथा अपने नेत्र के अर्पण से प्रसन्न शिव से विष्णु को सुदर्शन चक्र का लाभ।

❑ निन्यानबेवाँ अध्याय ५७५

देवी की उत्पत्ति

(दक्ष के यज्ञ का विध्वंस) शिव के वामांग से शिवा की उत्पत्ति और उन्हीं का दक्ष की पुत्रीत्व और पार्वतीत्व का वर्णन।

❑ सौवाँ अध्याय ५७७

शिव कृत दक्ष के यज्ञ का विध्वंस

दक्ष के यज्ञ के विध्वंस का वर्णन। पुनः यज्ञ का शिव से प्रतिसंधान (उपचार)।

❑ एक सौ एक अध्याय ५८१

मदन का दाह

पार्वती की हिमवान से मेना में उत्पत्ति, शिव की प्राप्ति के लिये पार्वती की तपस्या तथा पार्वती को शिव से जोड़ने में उद्यत काम का महेश्वर के नेत्र से दहन का वर्णन।

❑ एक सौ दूसरा अध्याय ५८५

उमा का स्वयंवर

उमा के तप से संतुष्ट शिव का शिशु रूप में उमा के स्वयंवर में आना, देवों का स्तम्भन से पराभव तथा हर गौरी विवाह।

❒ एक सौ तीसरा अध्याय ५९०
पार्वती के विवाह का वर्णन
बहुत धूमधाम से सम्पादित उमा महेश्वर के विवाह का विस्तार से वर्णन तथा विवाह करके शिव का काशी में निवास और उस स्थान के माहात्म्य का वर्णन।

❒ एक सौ चौथा अध्याय ५९७
देव की स्तुति
गणेश की उत्पत्ति, काम और देवों द्वारा कृत परम शक्तिदायक शिवस्तव राज का वर्णन।

❒ एक सौ पाँचवाँ अध्याय ६००
विनायक का जन्म
गजानन विघ्नेश का शिव के शरीर से उद्भव तथा शिव से विघ्नेश्वर गणेश को वर प्राप्ति।

❒ एक सौ छठवाँ अध्याय ६०३
शिव ताण्डव कथन
दारुक असुर के विनाश के लिये देवों द्वारा प्रार्थित शिव के शरीर से काशी के क्षेत्रपाल की उत्पत्ति तथा शिव के ताण्डव से अभिन्न नृत्य प्रसंग का वर्णन।

❒ एक सौ सातवाँ अध्याय ६०६
उपमन्यु चरित
दूध के लिये माता के कहने से हिमवान पर तप करने वाले द्विज कुमार उपमन्यु की परीक्षा के लिये शिव का इन्द्र रूप धर आना, इन्द्र के मुख से शिव की निन्दा सुनकर अथर्व अस्त्र से शिव निन्दक का वध करने के लिये उद्यत मुनि कुमार को शिव का दर्शन और उपमन्यु को शिव से वर प्राप्ति का कथन।

❒ एक सौ आठवाँ अध्याय ६१२
पाशुपत व्रत माहात्म्य
वसुदेव के पुत्र श्री कृष्ण का उपमन्यु से दीक्षा ग्रहण करना तथा पाशुपत ज्ञान आदि का वर्णन।

• लिंगमहापुराण (उत्तर भाग) ६१४-८३७

❒ पहिला अध्याय ६१५
कौशिक वृत्त कथन
सांब प्रिय विष्णु के गान से पर प्रीति कथन तथा भगवत के गुरुगान में रत कौशिक के इतिहास का वर्णन।

❒ दूसरा अध्याय ६२२
विष्णु माहात्म्य
नारद द्वारा संगीत विद्या की प्राप्ति, नारद का तुम्बुरु के साथ भगवत्कृत समता का वर्णन, भगवतगुण के माहात्म्य का वर्णन।

❑ तीसरा अध्याय ६२३
वैष्णव गीत कथन
श्रीकृष्ण की कृपा से बहुत प्रयास से गान बन्धु, सत्या और जाम्बवती आदि से बहुत काल में नारद को गान प्राप्ति का वर्णन।

❑ चौथा अध्याय ६३३
विष्णु भक्त कथन
वैष्णव लक्षण, वैष्णव माहात्म्य, वैष्णवों से रुद्र भक्तों की श्रेष्ठता का वर्णन।

❑ पाँचवाँ अध्याय ६३५
श्रीमती की कथा
परम अद्भुत अम्बरीष के चरित में विष्णु की माया के प्रदर्शन से रामावतार के ग्रहण के कारण का कथन।

❑ छठवाँ अध्याय ६४८
अलक्ष्मी का कथानक
विष के बाद समुद्र से अलक्ष्मी की उत्पत्ति, अलक्ष्मी के वास योग्य स्थान का कथन तथा उसके आवास स्थान का कथन।

❑ सातवाँ अध्याय ६५६
द्वादशाक्षर मन्त्र की प्रशंसा
विष्णु के अष्टाक्षर, द्वादशाक्षर मन्त्र के जप का माहात्म्य वर्णन के प्रसंग में ऐतरेय द्विज के इतिहास का कथन।

❑ आठवाँ अध्याय ६५९
अष्टाक्षर मन्त्र
विष्णु मन्त्र की अपेक्षा शिव के मन्त्र की श्रेष्ठता का वर्णन तथा शिव मन्त्र के जप से धुंधमूक ब्राह्मण के पुत्र को गाणपत्य पद के लाभ का कथन।

❑ नौवाँ अध्याय ६६२
पाशुपत संस्कार
शिव के पशुपतित्व का कथन, तथा पशुपाश मोक्ष का विवरण।

❑ दसवाँ अध्याय ६६७
उमापति का माहात्म्य
शिव का प्रकृति, पुरुष अहंकार आदि से बंधन के अभाव का वर्णन तथा शिव की आज्ञा से ही सर्ग (सृष्टि) आदि सब कार्यों का प्रवर्त्तन।

❑ ग्यारहवाँ अध्याय ६७१
शिव की विभूतियों का वर्णन
उमा महेश्वर की श्रेष्ठ विभूतियों का वर्णन। भक्तिवर्द्धक शिव लिंग की पूजा के माहात्म्य का वर्णन।

□ बारहवाँ अध्याय ६७५
शिव की आठ मूर्त्तियाँ
शिव की अलग-अलग मूर्त्ति की संज्ञा (नाम) का वर्णन। उनकी स्त्रियों और पुरुषों का वर्णन।

□ तेरहवाँ अध्याय ६७९
शिव की अष्टमूर्त्ति की महिमा
शिव की अलग-अलग मूर्त्ति की संज्ञा (नाम) का वर्णन।

□ चौदहवाँ अध्याय ६८२
पंच ब्रह्म कथन
पंच ब्रह्मात्मक शिव के सर्वतत्त्वात्मक स्वरूप का वर्णन।

□ पंद्रहवाँ अध्याय ६८५
शिव का माहात्म्य
ऋषियों द्वारा बहुधा कहे गये उन-उन संज्ञाओं का निरूपण।

□ सोलहवाँ अध्याय ६८८
शिव के रूप
सर्व रूप शिव के बहुत मुनियों द्वारा अलग-अलग कहे गये नामों और रूपों का वर्णन।

□ सत्तरहवाँ अध्याय ६९१
शिव की महत्ता
सत्त्व गुण रुद्र के विग्रह से विश्व के उद्भव का वर्णन, तथा रुद्र कृत देवों को उपदेश (शिक्षण)।

□ अट्ठारहवाँ अध्याय ६९४
पवित्र पाशुपत व्रत
ब्रह्मा आदि देवों द्वारा कृत महेश की स्तुति का वर्णन, देवताओं द्वारा महेश को प्रसन्न करने वाले पाशुपत व्रत के करने से शिव की कृपा के लाभ का वर्णन।

□ उन्नीसवाँ अध्याय ७००
शिव की पूजा विधि
मुनियों द्वारा पूछे गये महेश द्वारा रचित रवि मण्डल में स्थित उमा सहित मण्डल देवता से आवृत शिव की पूजा विधि का वर्णन।

□ बीसवाँ अध्याय ७०५
शिव पूजा के साधन
मण्डल में स्थित उमा महेश्वर पूजा में शिव द्वारा प्रोक्त अधिकारी का निरूपण, आग्नेय विधान से शिव दीक्षा का निरूपण।

❒ **इक्कीसवाँ अध्याय** ७१०
दीक्षा विधि
तंत्रोक्त दीक्षा विधि का वर्णन, शुभ नियम कथनपूर्वक शिव की पूजा के फल का निरूपण।

❒ **बाईसवाँ अध्याय** ७१७
तत्त्वों का समर्पण
सौर स्नान विधि का निरूपण, वाष्कल आदि मुनि द्वारा निरूपित भास्कर की अर्चन विधि का निरूपण।

❒ **तेईसवाँ अध्याय** ७२५
शिव की पूजा विधि
अंग मंत्र मूर्ति विद्या सहित मानस श्री शंकर की अर्चन विधि का निरूपण।

❒ **चौबीसवाँ अध्याय** ७२९
शिव की पूजा की विधि
तंत्रोक्त विधि से शंकर की अर्चना का निरूपण।

❒ **पच्चीसवाँ अध्याय** ७३६
शिव से सम्बन्धित पवित्र अग्निहोत्र
शिव प्रोक्त परम शोभन विविध अग्नि कार्य का विस्तार से प्रतिपादन।

❒ **छब्बीसवाँ अध्याय** ७४६
अघोर पूजा की विधि
शिव के लिंग में ध्यान आदि सहित अघोर के अर्चन के फल का निरूपण।

❒ **सत्ताईसवाँ अध्याय** ७४९
अभिषेक विधि
स्वयंभुव मनु के तप से सन्तुष्ट शिव द्वारा प्रतिपादित रूप सहस्त्र परिवार देवता युक्त श्री जयअभिषेक का विस्तार से प्रतिपादन।

❒ **अट्ठाईसवाँ अध्याय** ७७०
तुला पुरुषदान विधि
स्वयंभुव नामक मनु को सनत्कुमार प्रोक्त राजाओं का धर्म, अर्थ, काम और मोक्षदायक तुला पुरुष दान विधि का निरूपण।

❒ **उन्तीसवाँ अध्याय** ७७९
हिरण्यगर्भ की दान विधि
महादानों मे दूसरा हिरण्यगर्भ नामक दान-जो कि शिव को प्रसन्नता दायक है— उसके दान का निरूपण और उसके फल का कथन।

❒ **तीसवाँ अध्याय** ७८१
तिल पर्वत का दान
महादानों में तीसरे तिल पर्वत दान विधि का निरूपण।

❑ इकत्तीसवाँ अध्याय ७८३
सूक्ष्म पर्वत की दान विधि
स्वल्प द्रव्य से अन्य सूक्ष्म तिल पर्वत दान विधि का निरूपण।

❑ बत्तीसवाँ अध्याय ७८४
सुवर्णमेदिनी का दान
महादानों के मध्य चौथा सुवर्णमेदिनी दान विधि का निरूपण।

❑ तैतीसवाँ अध्याय ७८५
कल्पपादप दान विधि
महादानों में पाँचवाँ कल्पपादप की दान विधि का निरूपण।

❑ चौतीसवाँ अध्याय ७८६
गणेशेश दान विधि
महादानों में छठवें पुण्यदायक गणेशेश की दान विधि का निरूपण।

❑ पैंतीसवाँ अध्याय ७८७
सुवर्णधेनु दान विधि
महादानों में सातवें सुवर्ण धेनु दान की विधि का निरूपण।

❑ छत्तीसवाँ अध्याय ७८९
लक्ष्मीदान विधि
महादानों में आठवें महान ऐश्वर्यदायक लक्ष्मी दान की विधि का निरूपण।

❑ सैतीसवाँ अध्याय ७९०
तिलधेनु दान विधि
महादानों में नवें तिलधेनु की विधि का संक्षेप में निरूपण।

❑ अड़तीसवाँ अध्याय ७९२
सहस्त्र धेनु दान विधि
महादानों में दसवें परम शोभन गो सहस्त्रदान की विधि का संक्षेप में निरूपण।

❑ उन्तालीसवाँ अध्याय ७९३
स्वर्ण अश्व दान विधि
महादानों में ग्यारहवाँ विजय प्रदायक हिरण्य अश्व दान का निरूपण।

❑ चालीसवाँ अध्याय ७९४
कन्या दान विधि
महादानों में अति उत्तम बारहवाँ कन्यादान की विधि का निरूपण।

❑ इकतालीसवाँ अध्याय ७९५
स्वर्ण वृषभ दान
महादानों में तेरहवाँ हिरण्यवृषभदान विधि का निरूपण।

❑ **बयालीसवाँ अध्याय** ७९७

गजदान विधि

महादानों में चौदहवाँ गजदान विधि का निरूपण।

❑ **तिरालीसवाँ अध्याय** ७९८

आठ लोकपालों की दान विधि

महादानों में पन्द्रहवाँ आठ लोकपालों की दान विधि का निरूपण।

❑ **चौआलीसवाँ अध्याय** ८००

विष्णु दान विधि

महादानों में सोलहवें ब्रह्मा, विष्णु महेश की मूर्ति की दान विधि का निरूपण।

❑ **पैंतालीसवाँ अध्याय** ८०१

जीवत्श्राद्ध संस्कार की विधि

ब्रह्मा द्वारा मनु आदि के लिये प्रोक्त जीवत्श्राद्ध की शुभ विधि का निरूपण।

❑ **छियालीसवाँ अध्याय** ८०७

लिंग का स्थापन

शौनक आदि का रुद्र आदि देवता के स्थापन की विधि के विषय में प्रश्न तथा सूत जी द्वारा उसकी प्रशंसापूर्वक लिंग की श्रेष्ठता का वर्णन।

❑ **सैतालीसवाँ अध्याय** ८०९

लिंग का संस्थापन

लिंग संस्थापन विधि और उसके फल का संक्षिप्त वर्णन।

❑ **अड़तालीसवाँ अध्याय** ८१४

गायत्री के विभिन्न प्रकार

याग कुण्ड के विन्यासपूर्वक सब देवताओं की स्थापन विधि का निरूपण, शिव आदि देवताओं के गायत्री मन्त्रों का निरूपण तथा संक्षेप में प्रासाद अर्चन निरूपण।

❑ **उन्चासवाँ अध्याय** ८१८

अघोरेश की प्रतिष्ठा (स्थापना)

अघोर रूप शिव की प्रतिष्ठा जप और होम के विधान का निरूपण।

❑ **पचासवाँ अध्याय** ८२०

अघोर मन्त्र की विशेषता

शुक्राचार्य प्रणीत अघोरेश आराधन से निग्रह विधि का स्पष्ट प्रतिपादन।

❑ **इक्यावनवाँ अध्याय** ८२५

वज्रवाहनिका विद्या (वज्रेश्वरी विद्या)

ऋषि के प्रश्न के अनुरोध से शुक्राचार्य द्वारा प्रणीत इतिहास सहित वज्रवाहनिका नाम विद्या का निरूपण।

❑ बावनवाँ अध्याय ८२७
वज्रवाहनिका विद्या का विनियोग
गायत्री मन्त्र पूर्विका वज्रेश्वरी विद्या का विधान सहित विनियोग का निरूपण।

❑ तिरपनवाँ अध्याय ८२९
मृत्युंजय अनुष्ठान विधि
रुद्राध्याय से घृत आदि द्रव्यों द्वारा होम से कालमृत्यु महामृत्यु के प्रतीकार का निरूपण तथा मृत्युंजय निरूपण।

❑ चौवनवाँ अध्याय ८३०
त्रिअंबक मन्त्र से पूजा
पशुपाश मोक्षण तथा मृत्युहर त्रिअंबक महा मन्त्र की विधि का निरूपण।

❑ पचपनवाँ अध्याय ८३३
शिव के ध्यान की विधि
योगमार्ग से त्रियंबक के ध्यान के प्रकार का निरूपण, लिंगपुराण सुनने के फल का निरूपण।

- **कुछ विशेष शब्दों के अर्थ और टिप्पणियाँ** ८३९
- **श्रीलिङ्गमहापुराण के श्लोकों की अनुक्रमणी** ८४५
(अनुक्रमणी की उपयोग की विधि)
- **विषयानुक्रमणिका** ९३१
(श्रीलिङ्गमहापुराण में वर्णित विषयों की अनुक्रमणिका पृष्ठ संख्या निर्देश सहित)